हथेली के आईने में

रमेश मराठा

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रमेश मराठा आकाशवाणी कठुआ में वरिष्ठ उद्घोषक के पद पर कार्यरत हैं। उनका रेडियो पर बोलने का अंदाज़ ही कुछ ऐसा है कि साधारण शब्द भी उनकी जुबान से कविता के झरने की तरह झरते हुए प्रतीत होते हैं। उनके प्रथम काव्य संग्रह 'हथेली के आईने में' की कविताएँ भी पहाड़ी नदी की भांति उछलती-कूदती अपना रास्ता आप तलाश करती, अपने गंतव्य की ओर खुद-ब-खुद बढ़ती जाती हैं। इन कविताओं का सबसे विशिष्ट व खूबसूरत पहलू है कुदरती परिवेश। कविताओं में सहज-सरल भावनाओं को प्राकृतिक प्रतीकों, बिम्बों व अलंकारों से सजाया गया है जो पाठक को आत्म विभोर कर जाते हैं।

'हथेली के आईने में' की अधिकांश कविताओं का प्रमुख विषय प्रेम है। बिछड़े साथी की तलाश है। उसका इन्तज़ार है, संग-संग बिताए पलों की स्मृतियाँ हैं। अधूरे ख्वाब हैं, सिसकती-तड़पती हसरतें हैं। संवाद है, बार-बार मान जाने, चले जाने की पुकार है। अपनी आत्मानुभूति एवं सूक्ष्म जज़्बात को प्रकट करने के लिए जिन मौलिक प्रतीकों का प्रयोग कवि ने किया है, वे अनूठे हैं और उन्होंने कविताओं को नयापन एवं ताज़गी बख्शी है। जो कई बार दोहराये जाने के बावजूद भी अखरते नहीं।

- धर्मपाल साहिल

ISBN : 978-81-7408-457-6

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Complimentary Copy
to
Prof. Virender Rawal

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हथेली के आईने में

(रमेश मराठा की काव्य रचनाएँ)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हथेली के आईने में

रमेश मराठा

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 978-81-7408-457-6

अयन प्रकाशन

1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030

दूरभाष : 2664 5812

e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 160.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2011
© रमेश मराठा

HATHELI KE AAINE MEIN (Poetry) by Ramesh Marhatha

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो शब्द

कुछ रिश्ते पैदाइशी होते हैं, कुछ कच्चे धागों के, कुछ रिश्ते जाने-अनजाने होते हैं। मेरा आप सबसे जो रिश्ता है, वो आवाज़ का है, आवाज़ के माध्यम से आप सभी से एक अपनेपन का रिश्ता बन गया है। वैसे तो मैं कश्मीर का बाशिन्दा हूँ! और सरकारी नौकरी (आकाशवाणी कठुआ में वरिष्ठ उद्घोषक के पद पर कार्यरत) के सिलसिले में मुझे कश्मीर से कठुआ की सरज़मीं पर आना पड़ा। पर यहाँ के लोगों ने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं यहीं का हो गया। लेकिन अब भी जब कभी मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ तो खुदा की बनाई सबसे खूबसूरत क़ायनात यानी कश्मीर की हसीन वादियाँ, बर्फीली हवाएँ, इत्र में डूबी फ़िज़ा, चिनार के ख़ामोश दरख़्त मेरी रूह में समा जाते हैं। वहाँ गुज़ारा इक इक पल एक नक्शे की तरह मेरे ज़ेहन के कैनवास में उभरता और सिमटता चला जाता है। उन सभी यादों को कभी अल्फाज़ का लबादा पहनाने की कोशिश करता हूँ तो कभी आवाज़ के माध्यम से सबसे साँझा करता हूँ। आप सभी चाहने वालों के आग्रह पर अपने अल्फाज़ को 'हथेली के आईने में' समेटा है। मैं अपने आप को कोई शायर या कवि तसलीम नहीं करता। मेरे अल्फाज़ मेरे और मेरी रूह के हैं। या यूँ कह लीजिए कि एक आम आदमी के हैं जो खुद से खुद की बात कहता है और ख़ामोश हो जाता है। मैं अपने चाहने वालों का दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और अपनी माँ श्रीमती रूपावती जी का भी जिनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आशीर्वाद से 'हथेली के आईने में' आप तक पहुँचने में सक्षम हुआ। उम्मीद करता हूँ, दिल से कही मेरी बातें, दिलों तक पहुँचें।

- रमेश मराठा
वरिष्ट उद्घोषक
आकाशवाणी कठुआ
जम्मू कश्मीर
मो. : 9419245577

'हथेली के आईने में' शायद मुकम्मल न हो पाती अगर श्रीमती सुधा शर्मा इस किताब को तरतीब देने में मेरी मदद न करतीं। मुझे इन नज़्मों को किताब की शक्ल देने में श्रीमती सुधा शर्मा ने प्रेरित किया। मैं हमेशा इनका आभारी रहूँगा।

इसके अलावा आकाशवाणी कठुआ में अस्थायी उद्घोषिका सुश्री विजयता राजपूत का भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे हमेशा इसके लिए प्रोत्साहित किया।

इस 'हथेली के आईने में' के ज़रिए मेरे गुरु श्री प्राण चन्द्रा जी को मेरा शत-शत नमन, जिन्होंने हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। इसके अलावा मेरे सहकर्मी और मेरे तमाम चाहने वालों का मैं हमेशा आभारी रहूँगा, जिन्होंने मुझे इतना स्नेह दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रात:स्मरणीया, परम आदरणीया,

परम पूजनीया एवं मेरी सच्ची मार्गदर्शक

वन्दनीया माता जी

श्रीमती रूपावती जी

के चरणों में

सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रमेश मराठा : प्राकृतिक सौन्दर्य का शायर

रमेश मराठा शायरी की दुनिया का एक ख़ूबसूरत नाम है। मराठा जी का तआल्लुक़ आकाशवाणी कठुआ (जे. एंड के.) से है और जो लोग आकाशवाणी कठुआ के प्रोग्राम सुनते हैं उनके कान मराठा जी के नाम, उनके काम और उनकी आवाज़ से बख़ूबी आशना हैं। कुछ साल पहले उन्होंने आकाशवाणी कठुआ से एक प्रोग्राम 'यादें बन गईं गीत' के प्यारे नाम से शुरू किया था। इस प्रोग्राम की शोहरतें हर चहार तरफ़ फैल गयी हैं और हज़ारों, लाखों श्रोता इस प्रोग्राम से आबद्ध हो गये हैं। मराठा जी की आवाज़ एक चलता हुआ जादू है, उनकी आवाज़ में वो कशिश है कि जो कोई सुनता है वह मराठा जी का प्रशंसक हो जाता है।

रमेश मराठा जी कश्मीरी हैं - फूल की भांति सुन्दर और खिले हुए। उनकी शायरी का तआल्लुक़ कश्मीर के प्राकृतिक दृश्यों से है - बर्फ़ से ढके हुए पहाड़ों की आकाश को छूती हुई चोटियाँ, तेज़ रफ़्तार नदियाँ, बरसात में भीगे हुए सरसब्ज़ पेड़ों के साये, साँस लेती हुई ज़िन्दा जावेद सुब्हें, हाथों में हज़ार आईने लिये हुए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ झरने, रंग-बिरंगे पंछियों के मनमोहक चहचहे, इत्र में डूबी हुई हवाएँ, शामों के झुटपुटे और घरों को लौटते हुए पंछियों की लम्बी-लम्बी क़तारें, फूलों से लदी हुई हसीन वादियाँ, पत्थरों से सर फोड़ते हुए पुर-शोर पहाड़ी नदी-नाले, मन को मोह लेने वाले प्राकृतिक दृश्य और दूर किसी चरवाहे की बाँसुरी से निकलती हुई दर्द भरी लय से गूँजती हुई घाटियाँ रमेश मराठा की शायरी के लिए मवाद फ़राहम करती हैं। कठुआ में होते हुए भी वह महसूस करते हैं कि वह किसी चिनार के साये में बैठ कर शायरी कर रहे हैं।

वह शायरी क्या जिसमें महबूब का ज़िक्र न हो। मराठा जी भी किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हक़ीक़ी या काल्पनिक महबूबा की याद में कभी-कभी कविता कहते हैं। मराठा जी ने मेरी एक नज़्म-

तेरे खुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूँ

को अपनी सुन्दर आवाज़ में रिकार्ड कराया है और वह सी.डी. सुनने से तआल्लुक़ रखती है।

खुदा करे पुस्तक रूप में मराठा जी की शायरी दूर-दूर तक शुहरतों औश्र नेकनामियों की बस्तियाँ क़ाइम करे! आमीन!!

- राजेन्द्र नाथ 'रहबर'

(शिरोमणि उर्दू साहित्यकार, पंजाब सरकार)
1085 सराय मुहल्ला
पठानकोठ (पंजाब) 145001
फोन : 0186-2227522
मो. : 9417067191

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम के इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हैं 'हथेली के आईने में'

कविता वेगमयी भावनाओं का सहज एवं स्वाभाविक प्रवाह होता है। मनुष्य के भीतर के अनकहे अनुभवों को शब्दों का लिबास पहनाया जाता है। कविता मानवीय संवेदनाओं व सरोकारों से जुड़ने का साधन भी होती है। कुछ कविताएँ सृजित होती हैं तो कुछ 'क्राफ्ट' की जाती हैं। सृजित कविताएँ कवि के हृदय से निकल कर सीधे पाठक के हृदय में उतर कर उसकी रूह से रिश्ता जोड़ने की कोशिश करती हैं, जबकि 'क्राफ्ट' की गयी कविता में बौद्धिकता का अंश ज्यादा मात्रा में होता है और वह पाठक की बौद्धिक सन्तुष्टि तो करा सकती है, पर आत्मिक सन्तुष्टि पूर्णतया कराने में सक्षम नहीं होती।

रमेश मराठा आकाशवाणी कठुआ में वरिष्ठ उद्घोषक के पद पर कार्यरत हैं। उनका रेडियो पर बोलने का अंदाज़ ही कुछ ऐसा है कि साधारण शब्द भी उनकी जुबान से कविता के झरने की तरह झरते हुए प्रतीत होते हैं। उनके प्रथम काव्य संग्रह 'हथेली के आईने में' की कविताएँ भी पहाड़ी नदी की भांति उछलती-कूदती अपना रास्ता आप तलाश करती, अपने गंतव्य की ओर खुद-ब-खुद बढ़ती जाती हैं। इन कविताओं का सबसे विशिष्ट व खूबसूरत पहलू है कुदरती परिवेश। कविताओं में सहज-सरल भावनाओं को प्राकृतिक प्रतीकों, बिम्बों व अलंकारों से सजाया गया है जो पाठक को आत्म विभोर कर जाते हैं।

'हथेली के आईने में' की अधिकांश कविताओं का प्रमुख विषय प्रेम है। बिछड़े साथी की तलाश है। उसका इन्तज़ार है, संग-संग बिताए पलों की स्मृतियाँ हैं। अधूरे ख्वाब हैं, सिसकती-तड़पती हसरतें हैं। संवाद है, बार-बार मान जाने, चले जाने की पुकार है। अपनी आत्मानुभूति एवं सूक्ष्म जज़्बात को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकट करने के लिए जिन मौलिक प्रतीकों का प्रयोग कवि ने किया है, वे अनूठे हैं और उन्होंने कविताओं को नयापन एवं ताज़गी बख्शी है। जो कई बार दोहराये जाने के बावजूद भी अखरते नहीं।

इस संग्रह की कविताओं में प्रेम के इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हुए हैं। कुदरत की खूबसूरती की छटा देखते ही बनती है –

'जैसे लौटता है
मखमली मौसम
और हरा होता है जंगल
.... जैसे बुलबुल
शबनमी बूँदों से नहा रही हो।
जैसे खामोश वादी में
फरिश्तों की बारात आई हो....'

मिलना-बिछड़ना ज़िंदगी के दो अहम् अंग हैं। बिछड़े साथी को न भुला पाने की पीड़ा और दरम्यां आए फ़ासलों की टीस कुछ यूँ उभरती है –

'तुम्हारी मासूम बेबस
अदाओं का अहसास
कैसे भुला पाऊँगा
जबकि हमारे रिश्ते अब
पिंजरों में कैद हैं
....फिर भी इन रिश्तों की खुशबू
हमारे दरम्यां आए फासलों को
कम करने में
हमेशा मदद करती रही है।'

तन्हाई के आलम में, दिल की बेकरारी को लफ्ज़ों का पैरहन पहनाते हुए कवि रमेश कहते हैं –

'तुम्हारी हथेली में अपना अक्स ढूँढ़ लूँ
ताकि अपनी बिखरी सूरत संवार सकूँ....'

इसी प्रकार मन के मौन से उसके तसव्वुर में होती गुफ्तगू का अंदाज़ भी देखिए –

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'कोई बात चले
तुम्हारे ख्वाबों की
तुम्हारी इबादत की
वो बारिशों में भीगने की....
उदासी भरे इन पीले पत्तों के मौसम में
सिर्फ तुम्हारी यादें
साये की तरह मेरे साथ-साथ हैं...."

उपरोक्त कोमल अनुभूतियों के साथ-साथ कवि वादी की बदली हुई फज़ा और उसमें घुली दहशत से भी वाबस्ता है। वादी के दहशतज़दा मौसम का चित्रण कवि ने कुछ यूँ लिखा है -

"इन झीलों के सीने में
खंजर तैरते देखे हैं
और हमने खून उबलते देखा है
पानी में कश्तियाँ डूबी हुई हैं
मल्लाहों को किनारां पे रोते हुए देखा है....'

कवि को धरती का बंटवारा नहीं भाता। ज़मीन पर बनाई सरहदें उसे ग़वारा नहीं हैं। वह तो समूची कायनात को एक देखने का चाहवान है। बंटवारा ज़मीन का हो या दिलों का, उसे नागवार गुज़रता है। इस बंटवारे का दर्द उनकी कविताओं - 'पंछी उस पार के' तथा 'सरहदों के आर-पार' में बहुत शिद्दत के साथ उभरा है -

"बेशक
अब ये सरहदें बाँटती हैं इन्सानों को
पर जज़्बात का बँटवारा
फिर भी न हो सका....'

'हथेली के आईने में' में कवि मन की अतृप्ति तथा जन्मों की प्यास बसी है तथा उस सागर की तलाश है, जो उसकी इस आत्मिक प्यास को बुझा दे। इस संग्रह की कविताएँ किसी वाद-विवाद एवं विशिष्ट लहर से मुक्त हैं। संयमित एवं सटीक शब्द चयन तथा उर्दू की चाशनी में डूबी रमेश मराठा की कविताएँ जहाँ ज़ज़्बातों की रवानगी व पुख्तगी से लबरेज़ हैं, वहीं उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़यालों को उन्मुक्त उड़ान के साथ-साथ नज़ाकत व नफासत भी हासिल हुई है।

कवि ने आत्मानुभूति तथा सूक्ष्म भावनाओं को प्रकट करने के लिए जिन मौलिक प्रतीकों का प्रयोग किया है वे कविता के ख़ज़ाने में अनमोल मोती साबित होंगे। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

मखमली मौसम, फरिश्तों की बारात, विरानी के पत्थर, सुरमई उजाले, हथेली में अक्स, मखमली आँचल, मखमली ज़मीन, पीले पत्तों के मौसम, सिरफिरे मौसम, हथेली के आईने में, पत्थरों के साये, रोशन लम्हे, लम्हों की फरियाद, शबनमी बूँदें, खुशबुओं के मेले, परछाइयों का कारवाँ, अतीत का मौसम - आदि आदि।

ये खूबियाँ कवि रमेश मराठा की कविता को आज के दौर के कवियों तथा कविता से अलग पहचान दिलाने में सक्षम हैं। ये कविताएँ हरेक वर्ग के पाठक को पसन्द आएँगी तथा उनकी संवेदनाओं को जगाएँगी, उनके जज़्बात को ऊर्जा प्रदान करेंगी - ऐसा मेरा विश्वास है। अपनी प्रथम खूबसूरत कृति के लिए कवि रमेश मराठा मुबारकबाद के हकदार हैं। उनकी लम्बी एवं सफल ज़िन्दगी तथा काव्य-संग्रह 'हथेली के आईने में' हेतु तारों जितनी शुभकामनाएँ।

शुभेच्छु,

धर्मपाल साहिल
(राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित)
पंचवटी, एकता एन्कलेव, लेन 02,
निकट साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)
फोन : 09876156964 एवं 09888369363

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवितानुक्रम

1.	मख़मली मौसम	19
2.	रिश्तों की खुशबू	20
3.	उम्मीदों के चिराग़	21
4.	ख़ामोश पानी	23
5.	आओ! चलें	25
6.	रूह का सफ़र	26
7.	तुम्हारे लौटने तक	27
8.	साथ-साथ	29
9.	कोई बात चले	30
10.	तुम्हारी तस्वीर	32
11.	एक उम्मीद	33
12.	सिरफिरे मौसम में	34
13.	तुम्हारा साया	36
14.	पीले पत्तों के मौसम में	37
15.	आरज़ू में	39
16.	टूटने के बाद	41
17.	बदला हुआ कुछ	42
18.	तहरीरें और तस्वीरें	44
19.	उसका जाना	45
20.	चाहत में	47

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21.	सिलसिले ख़्वाबों के	48
22.	तुम्हारी पनाह में	60
23.	हथेली के आईने में	51
24.	ये हो न सका	53
25.	कोहरे की चादर	54
26.	उम्मीद में	55
27.	पंछी उस पार के	56
28.	चले आओ	57
29.	बिना साहिल के	59
30.	बिखरे ख़्वाब	61
31.	रोशनी के साथ-साथ	62
32.	जीने के लिए	64
33.	ख़फ़ा आसमा	66
34.	गुलाबी चेहरे की खुशबू	67
35.	चाँद निकल आया	68
36.	मैं पागल हूँ	69
37.	ख़ामोशी में डूबा	70
38.	टूटते तारों का मंजर	71
39.	साये पत्थरों के	72
40.	परियों का शहर	74
41.	रोशन लम्हे	75
42.	आख़िरी किरण	76
43.	तुम्हारे आने तक	77
44.	चलो चलें	79
45.	रास्ते प्यार के	80
46.	ख़्वाबों की ताबीर	81
47.	जेहन के केनवास पर	82

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

48.	न खुदा ही मिला	83
49.	इन्तज़ार का मौसम	84
50.	तुम्हारे बाद	85
51.	खोया चाँद	86
52.	अधूरा सफ़र	87
53.	दर्द की बदली	88
54.	इबादत की इबारत	89
55.	लम्हों की फरियाद	90
56.	तुम्हारे इन्तज़ार में	91
57.	मखमली ज़मीन	92
58.	बेनाम रिश्ते	94
59.	जीने के लिए	95
60.	तुम्हारा एहसास	96
61.	मुंतज़िर हवाएँ	97
62.	एक फ़रियाद	98
63.	खुदाओं का खुदा	99
64.	क्या तुम्हें याद है	100
65.	डूबते अक्स	101
66.	ऐसे मौसम में	102
67.	साये की तलाश	103
68.	अतीत का मौसम	104
69.	तेरे दिल में	105
70.	दुआएँ	106
71.	खुशबुओं के मेले	107
72.	इज़हार	108
73.	कोशिश	109
74.	परछाइयों का कारवाँ	110

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

75.	कदमों के निशां	111
76.	आगाज़	112
77.	ढूँढ़ता हूँ उसे	113
78.	सरहदों के पार	114
79.	कुछ कहो	115
80.	उस जहां में	116
81.	नीले पानियों में	117
82.	सरहदों के आर पार	118
83.	गुमनाम सफ़र	119
84.	कुछ तुम कहो - कुछ हम कहें	121
86.	अधूरे ख़त	122
87.	माज़ी के रिश्ते	123
88.	पिछले मौसम में	124
89.	मेरे महबूब	125
90.	कभी यूँ भी तो हो	126

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मख़मली मौसम

जैसे लौटता है
कोई मख़मली मौसम
और हरा होता है जंगल
वैसे ही
जैसे पूनम का चाँद
आकाश से उतर आया हो
जैसे बुलबुल
शबनमी बूँदों में नहा रही हो
जैसे इस
ख़ामोश वादी में
फ़रिश्तों की बारात आई हो
जैसे इस विरानी के पत्थर आज
कुछ-कुछ कहना चाह रहे हैं
जैसे यहाँ
ये पागल हवाएँ
अपनी फ़रियाद लिए
खुद से मुख़ातिब हैं
वैसे ही जब-जब
दिल हमारा धड़कता है
तुम्हें याद करते हैं। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिश्तों की ख़ुशबू

और मैं चलता रहा
उस मोड़ तक
जहाँ तुम मुझे तन्हा छोड़ आए थे
ग़रचे यह सफ़र आज भी मुझे
मेरे हर उस बीते लम्हे को
भुलाने का हौसला देता है
मगर तुम्हारी मासूम बेबस
अदाओं का अहसास
कैसे भुला पाऊँगा
जबकि हमारे रिश्ते
अब पिंजरों में कैद हैं
फिर भी उन रिश्तों की ख़ुशबू
हमारे दरम्यां के फ़ासलों को
कम करने में
हमेशा मदद करती रही है। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उम्मीदों के चिराग़

आज की शब
क्यों न लड़खड़ाएँ
इन अंधेरों में
मैं तुम्हें सम्भाल लूँ
और तुम मुझे सम्भाल लेना

चलें हम साथ-साथ
उम्मीदों के चिराग़ रौशन करें
ताकि एक नई सुनहरी सुबह हमें
अपनी बाहों में समेट ले

भूल जाएँ बीते मौसम को
यादों को
जब तुम तन्हा थी
और मैं भटकता मुसाफ़िर
क्यों न इस मौसम में याद करें
ढलती शामों को
सुरमई उजालों को
रात की नरम मिज़ाजी को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी मासूम अदाओं को

इस सफ़र में
फिर से साथ-साथ लड़खड़ाएँ
और दूर तक चलें
सम्भलते सम्भलते। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ामोश पानी

आओ!
तुम्हारे और मेरे दरम्यां
इन फ़ासलों को
नज़दीकियों में तबदील करने की कोशिश करें
फिर से इस ख़ामोश पानी में
पत्थर फेंकें
ताकि इन लहरों का मिलन
साहिलों से हो

आओ!
इन बादलों को
अपनी मुट्ठी में कैद करें
और फिर से पहले की ही तरह
बारिश में भीग जाएँ
मैं तुम्हारी हथेली में
अपना अक्स ढूँढ़ लूँ
ताकि अपनी बिखरी सूरत
संवार सकूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आओ! हम दोनों आज यह अहद करें
कि नहीं बिछड़ेंगे फिर से कभी
और तुम्हारे मेरे दरम्यां
इन फ़ासलों को हमेशा-हमेशा के लिए
अलविदा कह दें। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आओ! चलें

आओ! चलें दूर तक
ढूँढ़ें मील के पत्थर को
और फिर छू लें उसे
मैं तुम्हारे कदमों को नाप लूँ
अपनी अगुंलियों से
कुछ फ़ासले रहने दूँ
शायद ये फ़ासले बनें
तुम्हारे करीब आने को
ताकि मैं इन्हें अपना कर
आने वाले कल के सपनों को
साकार कर सकूँ
तुम्हारा आँचल मख़मली
उम्मीदों से भर दूँ

आओ! चलें दूर तक
जहां तक
जहां तक ज़मीन और आसमां का
मिलन हो
अपनी तमन्नाओं के साथ। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूह का सफ़र

शायद वो मेरा साया था
सहमा-सहमा
पर बेवजह परेशान
यूँ ही बिखरा-बिखरा
अपने अतीत को याद करता
अपनी परछाई से
कई बार सवाल करता
रूहों के सफ़र के रहस्य को
जानने की कोशिश करता

वक्त से पहले
जो लोग चले जाते हैं
उनके अपनों के दुःख में शामिल होना
कुछ अहसासात
कुछ ऐसे जज़्बात जो
मेरे साये को घेर लेते हैं
जकड़ लेते हैं
और नोच लेते हैं बेवजह। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे लौटने तक

मुख़्तिसर सी मुलाक़ात थी तो ज़रूर
पर सफ़र सदियों का हमने तय किया
इसी उम्मीद से
कि दौरान-ए-सफ़र हमारी मुलाक़ातें
माज़ी के रिश्तों की
पहचान को बरक़रार रखने में
हमारी मदद कर सकें

कहीं तुम भटक न जाना
क्योंकि तुम्हारे अब के सफ़र की शुरूआत
टेढ़े मेढ़े रास्तों से होगी
तुम्हें मंज़िल तक पहुँचने के लिए
इन कच्ची पगडंडियों से गुज़रना होगा
और अपनी मुस्कुराहट को रोकना होगा
क्योंकि इन रास्तों से गुज़रने वाला
हर शख़्स ग़मज़दा है
मायूस है

मैं यह भी जानता हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये तुम्हारे पैरों के निशान
कब तक इस रेतीली ज़मीन पर
महफूज़ रह सकते हैं

इन पागल हवाओं में
तुम्हारे नीले रंग का दुपट्टा
सरक तो जाएगा तुम्हारे बदन से
ये तुम्हारे बालों की खुशबू
क्या मैं अब महसूस कर पाऊँगा
क्या तुम्हारे कंपकंपाते होठों
प्यारी आँखों
और गर्म साँसों का यौवन
हमेशा के लिये बरकरार रहेगा

मैं यह भी सोचता हूँ कुछ पल के लिये
कि शायद
यह वक़्त अब ठहर जाएगा तुम्हारे लौटने तक
क्योंकि हमारे इन्तज़ार की परछाईं में
तुम मौजूद हो,
हाँ, तुम्हीं मौजूद हो। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ-साथ

मेरे शब्दों में
तुम्हारे नाम की दीवानगी
हमेशा महफ़ूज़ रहती
जो तुम मेरी ढलती उम्र को
अपनी पनाह में लेते
मेरे गुनाहों को अपने आँचल में छिपा लेते
और मेरे दर्द को अपना दर्द समझते
मेरी परेशानी में मेरे हम कदम साथ-साथ चलते
मेरे सफ़र के आख़िरी पड़ाव तक
जहाँ से हमारे तुम्हारे बीच पनपे
एक नये रिश्ते की शुरूआत होती। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई बात चले

कोई बात चले तेरे हुस्न की
तेरी पाकीज़गी की
तेरे रिश्तों की
तेरी मासूमियत की

कोई बात चले
तुम्हारे ख़्वाबों की
तुम्हारी इबादत की
वो बारिशों में भीगने की
वो तपती तिलमिलाती धूप में
बेपनाह इन्तज़ार की

कोई बात चले
ढलती शामों की
सुरमई रातों की
घुप्प अंधेरों की
तेज़ रोशनी की

कोई बात चले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन्दिरों में पूजा की
मस्जिद में अज़ान की

कोई बात चले
वादियों में ख़ामोशी की
तन्हा पत्थरों की-
'परिन्दों की
इन घटाओं की - फ़िज़ाओं की
भटकी रूहों की
और कोई बात चले हम दोनों के
'पुनर्जन्म' की। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी तस्वीर

यह वो ख़ूबसूरती है
जिसे महसूस किया जा सकता है तज़किरा नहीं
इन नीले आसमानों पर
ये बादल के टुकड़े
तैर कर तुम्हारे आँचल में पनाह लेते हैं
इस का एहसास है हमें
पर क्या तुम्हारे आँगन के किसी कोने में
धूप जन्म लेती है कि नहीं
नहीं... शायद नहीं...
इसलिए इस घर के दर-ओ-दीवार
हमेशा पिघलते रहते हैं
और टूटी छत से
पानी की कुछ बूँदें
जा गिरती हैं तुम्हारी मुस्कुराती तस्वीर पर
जो बरसों से
इन तन्हा ख़ामोश पत्थरों को
अपने हुस्न-ओ-जमाल से
रौनक़ बख़्शती आ रही हैं। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक उम्मीद

सीने में आग है
आँखों में जलन है
मेरे रास्ते की हर रहगुज़र
क्यों इतनी कठिन है?

माँगी थी रोशनी
पर अंधेरों ने दामन थाम लिया है
चाहा था फूल खिलें मेरे आँगन में
पर काँटों से दोस्ती हो गई
कई बार
इस तरह के सिलसिले जारी रहे
और हम उफ़ तक न कर सके
शायद मेरा वादा था ज़िन्दगी से
जो निभाता आ रहा हूँ मैं
जन्मों जन्मों से
एक उम्मीद के साथ
कि तेरा मेरा मिलन होगा
किसी न किसी जन्म में। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिरफिरे मौसम ने

आज ये मन क्यों उदास है
क्या मेरी गली से गुज़रना वो अब भूल गई हैं?
आज इन आँखों में ये अश्क क्यों बह रहे हैं?
क्या अब भी वो अपनी दुनिया से नाराज़ है
आज मुझे भीगना अच्छा क्यों नहीं लगता है
जबकि आज की ये बारिशें
मेरी दुआओं में शामिल थीं
अक्सर तुम्हारे आने की आहट
मेरी ख़ामोशी को क्यों सुला देती है
क्यों? तुम्हारी यादें आ-आ कर मुझे रुला देती हैं?
क्यों? आज यहाँ इन ज़मीनों पर
अब भी मोहब्बतों का बँटवारा किया जाता है?
क्यों? अब भी यहाँ इन बोलते परिन्दों की
सर-ए-आम बोली लगाई जाती है

देखे हैं हमने मौसम-ए-पतझड़
बिन मौसम-ए-बहार
क्यों? एक आरज़ू हर पैहर
याद दिलाते हैं मुझे तुम्हारी यादों के मौसम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब चाँदनी रातों में
साथ-साथ मिला करते थे हमारे साथ
क्यों? मैं तुम्हारे एहसास को
अकसर अपनी तन्हाइयों में महसूस करता आया हूँ
क्यों? तुम मेरे ख़्यालों में
धुंधली तस्वीर बन कर उतर जाती हो
क्यों? मैं अपने घर की दीवारों में तुम्हें सजाता हूँ
अपनी विरानी को आबाद करने के लिए
क्यों? तुम मुझे अपने एहसास के घरौंदों में
शामिल करने की खुदा से इलतिजा करते हो
क्यों? यूँ ही इस सिरफिरे सफ़र के मौसम में
तुम्हारी आमद होती है धीरे-धीरे
बिना कुछ कहे, बिना कुछ सुने - ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारा साया

चलते चलते
तुम्हारी दुआओं का असर देखेंगे
और सर-ए-राह अपने इन्तज़ार को महफ़ूज़ रखेंगे
अपने महबूब के लिए-
उस महबूब के लिये
जो हर दम मेरे साथ, मेरे पास रहता है
मेरे साये की तरह
तुम्हारे कुछ ख़्वाबों ने एक मुद्दत के बाद
दिल में क्यों आज आस जगाई है
कि तुम्हारी साँसें, तुम्हारी धड़कनें
मेरे आने वाले कल का नसीब हैं-

हमारे हाथ भी उठते हैं
अब तुम्हारी दुआओं में
जब मेरे कारवाँ में तुम्हारा साया
मेरे साये के हमराह
इस रेतीले सफ़र में
मील के पत्थर की तरह
रह-गुज़र में शामिल तो होता है
पर रू-ब-रू नहीं होता। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीले पत्तों के मौसम में

उदासी भरे
इन पीले पत्तों के मौसम में
सिर्फ़ तुम्हारी यादें साये की तरह
मेरे साथ-साथ हैं
मेरे पास पास हैं
परछाइयों के इस सफ़र में
हमारे रास्ते पथरीले हैं
पर तुम्हारे हैं
उम्मीदों से भरे तुम्हारे लिए फिर सुबह होगी
और हमारे नसीब में है हिज़्र की ढलती शामें
इन रेतीली हवाओं का रुख क्यों नहीं कोई मोड़ लेता है
क्यों नहीं कोई मुझे अपने दामन में पन्हा देता है
मेरी चाहतों को हमेशा ये कौन दर्द का लिबास पहनाता है
क्यों कोई मुझे राह-ए-रुसवा छोड़ कर यूंही चला जाता है
यह कह कर
कि मैं लौट कर तुम्हारे ही पास आऊँगी
जीने के लिए
यह मेरा ही क़सूर था जो
उदासी भरे इन पीले पत्तों के मौसम में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने तुम्हें चाहा है अपनी चाहतों की तरह
तुम्हारे आसमाँ में
अपनी परवाह लिए बुलंदियों को छूने की आरज़ू की
तुम्हारे हाथों की लकीरों में
अपना मुकद्दर तलाशना चाहा
ये सोच कर कि मेरे आँसुओं से
शायद कभी भीगेगा तेरा प्यार- ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आरज़ू में

कुछ तो है
जो बे-वजह तुम मेरी ज़िन्दगी में आकर
मेरे मासूम ख़यालों को तन्हा कर जाते हो
और मैं तुम्हें सोचता रहता हूँ देर तक
कि तुम मुझे अपने आँचल में जो छिपाते
तो शायद मैं ख़ुदा से जीने की आरज़ू करता
गुज़ारिश करता
मेरे एहसास को तुम संभालते
मेरी धड़कनों में मेरे साथ शामिल हो जाते
मेरे अधूरे सफ़र में मेरे हमसफ़र बन जाते
मेरी विरानियों को तुम आबाद करते
मेरी राहों को तुम मुनव्वर करते
अपने सितम, अपनी परेशानी मुझे दे देते
मगर ये हो न सका
क्योंकि तुम्हें जाना था दूर
किसी और की दुनिया में
जहाँ शायद उजाले
तुम्हारी राहों को रौशन करने के लिए मुंतिज़र हैं
जहाँ पिंजरों में क़ैद परिन्दे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे आने का इंतज़ार करते हैं
अपनी आज़ादी के लिए
जहाँ ये बे-ज़ुबाँ पत्थर कुछ बोलने की फ़िराक में हैं
जहाँ ये अपनी ख़ामोशी तोड़ने के लिए तरस रहे हैं
बेचै हैं
मगर अब मुझे ख़ुद को सम्भालने के लिए
किस के हाथ उठेंगे मेरी दुआओं के लिए... ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूटने के बाद

जब रिश्ते टूट गए
तो फिर कल्पना क्यों करे
क्यों तुम्हारे बारे में सोचें
क्यों तुम्हारे दिए हुए तोहफे सम्भाल कर रखें
फिर क्यों न हम तुम्हारे लिखे हुए ख़त जलाएँ
तुम्हारी दी हुई निशानियाँ इन पानियों में बहा दें
तुम्हारे घर तक जा रहे इन रास्तों को
भूल जाने की कोशिश करें
जब ये रिश्ते टूट गए
तो फिर हम क्यों उजालों का इन्तज़ार करें
क्यों न घुप्प अंधेरों में गुम हो जाएँ
तन्हा चलें
चलें बचपन के आगोश में
मिट्टी के खिलौनों से टूटी दीवारों को सजाएँ
रंग बदलती दुनिया की तस्वीरों को
आख़िरी बार अपने कैनवास पर उतारने की कोशिश करें
शायद इस बार
मैं एक पा-ए-दार तस्वीर बनाने में सफ़ल हो जाऊँ। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदला हुआ कुछ

यही वो जगह है
जहाँ हम मिले थे कभी
सब कुछ अपनी जगह बरक़रार है क़ायम है
हाँ, ये चिनार तब बहुत छोटा था
पर अब इसी की शाखाएँ
आसमाँ से बातें करने लगी हैं
इसके नर्म नाज़ुक परछाइयों में बिछे
मख़मली घास पर
करवटें लेने को दिल कर रहा है
क्योंकि यह जगह आज भी वैसी ही है
जैसे पहले कभी हुआ करती थी
जहाँ सुनहरी शामों से पहले
गरूब (तलु) होते आफ़ताब का मंज़र
हमारी साँसों को ताज़गी बख़्शता रहा
ये हवाएँ हमारी रूहों को
अमन-ओ-सुकून से नवाज़ती रहीं
ये पानी अमृत से कम नहीं
यहाँ इन परिन्दों की मीठी-मीठी बोली
सरगम की तान छेड़ती थी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और हर कोई
अपनी आवाज़ इनकी बोली से मिलाया करता था
ताकि यहाँ का माहौल संगीतमय हो
बदला अगर है कुछ
तो वो है
सिर्फ हमारा अतीत
हमारा माज़ी
हमारा–बचपन
जो शायद कभी भी लौट कर नहीं आ सकता- ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तहरीरें और तस्वीरें

पिछले मौसम की
चन्द मासूम तस्वीरें
कुछ तहरीरें
अब भी महफ़ूज़ हैं हमारे पास
हमने इन्हें तपती धूप,
तेज़ बारिशों और घुप्प अंधेरों से बचा के रखा है
ये तस्वीरें-तहरीरें ही हमारा सरमाया होती हैं
क्योंकि ये हमें हमारा वजूद पहचानने में
मदद करती हैं
और हमें भटकने से रोक लेती हैं
परिवर्तन संसार का नियम है
और इन तहरीरों और तस्वीरों को छूने से हमें
इस बात का ज़रूर एहसास होता है
कि वाक्या ज़िन्दगी के हर पड़ाव पर
बदलाव की एक अपनी ख़ास अहमियत है
ग़र ये तहरीरें और तस्वीरें अब धुंधली हो चुकी हैं
लेकिन ना जाने क्यों
आज भी इनकी खुशबू में
पिछले मौसम की तर-ओ-ताज़ा और जावेदाँ होती है! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसका जाना

क्यों चले जाते हैं
वक्त से पहले
वो लोग जिन्हें ज़माना हमेशा याद करता है
वो मेरे साथ था मेरे ही साये की तरह
मेरे पास था - मेरी परछाई की तरह

पर अब छूट गया
चला गया
ले गया अपने साथ
मेरी आँखों की रोशनी
मेरे चेहरे की मुस्कान
छोड़ गया मुझे मेरी मायूसी के साथ
दे गया मुझे परेशानियाँ और आवारग़ी

ये जहाँ
क्या तुम्हें कभी भुला देगा!
नहीं! शायद कभी नहीं
क्योंकि तुम छोड़ गए हो
इस महफ़िल को वक्त से पहले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये दुनिया है सराय
कहावत मशहूर है
है कोई 'मस्मार' तो कोई 'मखमूर' है
कुदरत के हाथों यहाँ हर कोई मजबूर है। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहत में

मुझे उस मौसम का इन्तज़ार था
जिसमें तुम हरियाली बनकर
मेरे विराने में
सरसब्ज़ शादाब तर-ओ-ताज़ा
हवाओं का लिबास पहनाते
ख़ुशबू बन कर मेरी ज़िन्दगी में रौनक़ बख़्शते
मुझे मेरी तन्हाइयों से दो घड़ी अलग करते
अपने आँचल में छिपाते
छूने का मुझे हौसला देते
जी लेते हमारे साथ ख़ुशी और ग़म में
तुम मुझे यकीन दिलाते
मैं भी आपकी राहों में तकती आ रही हूँ
सजदा किए सदियों से उस उम्मीद से
कि दो पल ज़रूर आएँगे
जब हमारी भटकी रूहों का मिलन होगा
और हम दोनों की तपती सहर में
मौसम-ए-बहार दस्तक देगा
क्योंकि मैंने तुम्हें चाहा है
अपनी चाहतों की तरह। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिलसिले ख़्वाबों के

मैंने तुम्हारे चेहरे के तबस्सुम को
गुम होते हुए देखा है
राख के ढेर में न शोला है न चिंगारी
ज़लज़ले हैं
पर कोई लरज़ता क्यों नहीं
मौत है
पर कोई मरता क्यों नहीं
ये सिलसिले हैं ख़्वाबों के
इन्हें बस मेरे साथ
मेरे पास रहने दिया जाए
मेरी ख़ामोशी का लिबास बन कर
एक लम्बे अर्से के बाद
मैंने तुम्हें ख़्वाब में देखा है
ख़ामोश किनारों से गुज़रते हुए
रेतीली राहों पर
अपने पैरों के निशान बनाते हुए
पीछे छोड़ते हुए
शायद अपनी तक़दीर को कोसते हुए
बीते लम्हों को सहलाते हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़ख्मों को सिलते हुए
बिखरे बालों को संवारते हुए
नीले रंग के दुपट्टे को
सम्भालते हुए -
मैंने तुम्हें देखा है- ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी पनाह में

जब-जब दर्द जन्म लेता है
तब-तब तुम्हारे आसरे की
ज़रूरत महसूस होती है
मेरी मुश्किलों में
तुम जो मुझे अपनी पनहा में लेकर
मेरे कांधों को थपथपाती रही
मेरे बालों को सहलाती रही
मेरे कदमों की आहटों को नापती रही
मेरी विरानी को गुलज़ार करती रही
आज इस भीड़ के कोनों में
क्यों हर कोई अपनी परेशानी छिपाता है? ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हथेली के आईने में

तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने अपने चेहरे के
बिखराव को महसूस किया है
कितना बदल गया है ये मेरा चेहरा
इस की मासूमियत में जन्म-जन्म के रिश्ते मौजूद हैं
तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने अपने आने वाले कल के नसीब को
अपनी ही उम्मीदों से नापा है
क्योंकि सदियों के सफ़र को
हमने अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया है
तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने सपने देखे हैं
तुम्हारे साथ भीगने के
तुम्हारे साथ जीने मरने के
शायद हम दोनों का सफ़र
रेतीले रास्तों से गुज़रा होगा
इसलिए तुम्हारी हथेली के आईने में
हम दोनों अपनी थकान महसूस कर रहे हैं
तुम्हारी हथेली के आईने में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने चाँद को निहारा है
और अब तुम्हारी सूरत
टुकड़ों में मैं महसूस कर रहा हूँ
मेरी धड़कनों में तुम हमेशा शामिल रहे हो
इसीलिए तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने माज़ी की दीवारों को
सरसब्ज़ मख़मलीं रोशनी में
तब्दील होते हुए देखा है
मैंने तुम्हारी हथेली के आईने में
अपनी भटकती रूह की तड़प
और आह-ओ-ज़ारी। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये हो न सका

वक्त से पहले ग़र तुम मिल गए होते
तो शायद
हमारी मंज़िल का बँटवारा नहीं हो पाता
और ये सफ़र
हमारी खोई हुई पहचान को ज़िन्दा रखता
लेकिन ये न हो सका
और सिमट गई हमारी यह छोटी सी दुनिया
इस अंधेरे कोने में
यहाँ रोशनी का कोई
नाम-ओ-निशां तक नहीं। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोहरे की चादर

कोहरे की चादर में लिपटी
हमारी ज़िन्दगियाँ आज बे-बस क्यों हैं
ये शामें इतनी घनी, इतनी मजबूर क्यों हैं
क्या ये सितारे टिमटिमाना भूल गए हैं?
क्या हमारे आसमानों में ये चाँद अब बसता नहीं?
क्या अब यहाँ रात के बाद सुबह नहीं होती?
क्या यह ख़ामोश पानी अब हमारा नहीं?
क्या ये शब की हवायें
अब उसे छू कर नहीं आतीं?
क्या इन सन्नाटों को चीरती......
मदहोश करती उनकी साँसें...
अब हमारी फ़रियाद सुनने से कासिर हैं?
क्या अब यहाँ इबादतगाहों में
गुनहगारों की सुनी जाती है?
क्या यहाँ वक्त अब ठहर चुका है?
क्या कोहरे की चादर में लिपटी
हमारी ज़िन्दगियाँ -
यूँ ही भटकती रहेंगी बेवजह? ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उम्मीद में

धड़कते दिलों के एहसास को
महसूस करने के लिए
हमारी नज़दीकियाँ अक्सर उड़ान तो भर लेती हैं
पर 'गहराइयों' को छू नहीं पातीं
शायद यहीं से ज़िन्दगियों ने तड़पना शुरू किया है
एक सहारे की ज़रूरत है
हमारे आने वाले कल को
क्योंकि बे-परवाह इन काफ़िलों में
हम ही सिरफिरे थे
जो तुम्हारी उम्मीदों में
गुमनामी की ज़िन्दगी काट रहे हैं
यह सोचकर
कि 'वो' मेरा दामन भर देगा
अपनी रहमत से
अपनी नवाज़िश... अपनी मेहर से। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंछी उस पार के

बे-शक
अब ये सरहदें बाँटती हैं इनसानों को
पर जज़्बात का बँटवारा
फिर भी न हो सका
क्या कहा तुमने
क्या इसीलिए खींच लेते हैं हम
लकीरें इन सरहदों पर
ताकि फिर से इन्सानी रिश्ते बिखर जाएँ
और खाली हो जाए हमारा एहसास
पर इसके बावजूद
हमने सम्भाल के रखी है
अपनी तहज़ीब और तमीज
तभी शायद
उस पार के ये पंछी
अपनी दीवानगी के आलम से
हमें मदहोश करते हैं
और हाँ तुम्हारी खैरियत से
आगाह भी करते हैं। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चले आओ

अचानक
कुछ रिश्ते पल भर में बनते हैं
और पलभर में मिटते हैं
क्यों न
उन बीच के फ़ासलों को
हम दोनों कोई नाम दें
ताकि भटकी हुई रूहों को
सुकून मिल सके
शायद वो फ़ासले
हमें, हमारे अतीत के
हसीन पलों की यादों को
फिर से ताज़ा करने में कामयाब हों
वैसे भी
ज़िन्दगी तो एक फ़ासला ही है
मौत से मौत तक
कभी-कभी ये फासले
रिश्तों को मज़बूती की सौगात अदा करते हैं
और फिर हम
गुमनामी की दुनिया को अलविदा कहते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमेशा-हमेशा के लिए
चले... आओ
उस पार से इस पार तक
इन फ़ासलों को कुछ पलों के लिए मिटा दें
यहीं से शुरू करें एक ऐसा रिश्ता
जिसका कभी कोई अन्त न हो। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिना साहिल के

आज हमारे ये रिश्ते
किसी पहचान के मोहताज नहीं
इन रिश्तों की खुशबू से
महक उठती है हमारी दुनिया
तुम्हारी दूरी से ये रिश्ते
कभी मिट नहीं सकते हैं
क्योंकि हम हैं जन्म-जन्म के साथी
यह तुम भी जानते हो और मैं भी
क्या हुआ
इस नदी के किनारे
पानी छुए बिना रहे
क्या हुआ
इन मौजों ने
ख़ामोश साहिलों की जानिब रुख़ किया
क्या हुआ
इन लहरों के साथ
इस नदी के किनारे बह गए
ग़र यही दुनिया का दस्तूर है
तो आओ! आओ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्यों न फिर से तलाशें
उस नदी को
जो बिना किनारों के हो
बिना मौजों के हो
बिना साहिलों के हो
ताकि हमारे इन रिश्तों को
फरिश्ते भी झुक कर सलाम करें। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिखरे ख़्वाब

धरती के आँगन में
जहाँ रेत के टीलों पर
मुसव्वर खींच लेता है
अपने ख़याल की लकीरें
शायद यह सोच कर
कि इन सहराओं में भटकती
रूहों को सुकून मिले
और बिख़रे ख्वाबों के आग़ोश में
हम अपने आशियाने की तामीर को
मुकम्मल कर सकें
भूल जाएँ तुम्हारे दिए हुए हर दर्द ज़ख़्म को
समझाएँ इस मासूम दिल को
कि यहाँ रिश्तें
रेत के टीलों की मानिन्द हैं। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनी के साथ-साथ

मेरी हसरतों की दुनिया में
इन धुंधली तस्वीरों में
यह जाना पहचाना चेहरा
आज फिर से क्यों गुम हो गया है
मेरे इन लम्हों ने क्या ख़ता की है
जो तुम अक्सर मेरे वजूद को तन्हा कर जाते हो
टुकड़ों में बाँट लेते हो
और चले जाते हो यूँही बेवजह
शायद मेरा यही क़सूर था कि
मैंने चाँद को ज़मीन पर माँगा
सितारों को नहलाने की कोशिश की
बादलों को मुट्ठी में कैद करने की चाहत की
इन फ़िज़ाओं, इन हवाओं की रफ़्तार को
तुम्हारे आँचल में छिपाने की जुर्रत की
सूरज को देर से जलवा अफ़रोज़ होने की गुज़ारिश की
चाँद को चाँदनी बिखेरने से रोका
और तुम्हारी मासूम मुस्कराहट की बेताबी को
मील का पत्थर साबित करना चाहा
तुम्हें मैं तैरते बादलों में अक्सर महसूस करता रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनी के साथ-साथ
इस ज़मीन पर साये की तरह
मेरे नसीब को तुमने सँवारना चाहा
मगर ये हो न सका
क्योंकि मेरा वजूद मुख़्तसर सा था
और मेरी हसरतों की दुनिया
काँच के टुकड़ों की तरह बिखर गई
मेरी धुंधली तस्वीरों में
मेरा जाना पहचाना चेहरा
फिर से गुम हो गया
और पीछे छोड़ गया गुमशुदगी का
ला तैदाद - निशान। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीने के लिए

शायद यहीं से
हमारे ग़म के मौसम की शुरूआत हुई
आज भी ये मौसम
सिरफिरा है, लरज़ता है
हर कोई इस मौसम के आमद पर
न तुम अपने वजूद को पहचान सके
और ना ही मैं
अपने अंजाम की बारीकियों को जान सका
इन हवाओं में तुम्हारी बे-बसी और लाचारी
आज भी साफ झलकती है
ये हवाएँ तुम्हें छू कर मुझ तक पहुँची हैं
और इसके बावजूद
मैं भूल कर भी तुम्हें भुला ना सका
क्योंकि मेरे आकाश के चाँद में
तुम्हारा मासूम अक्स मौजूद है
अब हमारे जीने के लिए
मेरे आकाश के चाँद में
तुम्हारा ज़ाहिर होना लाज़मी है
क्योंकि मुझे मेरे ग़म के मौसम में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे भीगे गेसुओं को सँवारना भी है
तुम्हारी झील सी आँखों में काजल लगाना है
तुम्हारे 'पाँवों' में मेहन्दी रचानी है
और सुर्ख जोड़ा पहनाकर तुम्हें रुख़सत करना है
अपनी खुशियों को नीलाम करके
मुझे अपनी बेसब्री और इन्तज़ार का
इम्तिहान जो देना है
शायद हर जन्म में। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़फा आसमां

हम ने बर्फ़ को
आसमान में ही पिघलते देखा
यहाँ की बस्तियों में आग जो लगी थी
यहाँ मुफ़लिसी मजबूरी
चीख़-ओ-पुकार और आ-हो-ज़ारी का आलम था।
इसीलिए शायद हमारा आकाश हमसे ख़फा है
हमेशा नाराज़ रहता है
हर कोई यहाँ एक दूसरे से अलग है
और अपनी बे-बसी का मातम मना रहा है
यहाँ समय किसी का मोहताज नहीं
यहाँ मौसम बदलते हैं
और अपनी मर्ज़ी से सितारे टिमटिमाते हैं
यहां परिन्दे अपनी परवाज़ लिए
आसमां की बुलिंदयों को छूने की कोशिश करते हैं
यहाँ हर बात मुमकिन है
क्योंकि यहाँ जन्म मरन का सिलसिला
हमेशा से जारी है
और हर कोई इबादत गाहों में
सजदा किए, कुदरत की। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुलाबी चेहरे की खुशबू

तुम्हारे गुलाबी चेहरे की खुशबू
हर दौर में
मैं हर बार महसूस किया करता हूँ
ये हवाएँ तुम्हारे बालों में कंघी करती हुई तुम्हें
मेरे-पास होने का एहसास कराती है
इन फ़िज़ाओं में तुम्हारी पायल की छमछम
तुम्हारी चूड़ियों की ख़नक
और तुम्हारी नर्म-मासूम मुस्कान
मुझे मेरे बीते कल की हर बात याद दिलाती है
जब कभी
तुम्हारी मदहोश आँखों से आँसू छलकते हैं
यकायक दोपहर की धूप को
इन्द्रधनुष अपनी पनाह में लेकर
अपने आँचल में छिपा लेता था
यह सोच कर कि कहीं
तुम अपने वजूद से अलग न हो जाओ
और ता-क़यामत
तुम्हारे गुलाबी चेहरे की खुशबू
मैं महसूस करता रहूँ। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाँद निकल आया

तुम आए हो
तो आज से ही
भीगते मौसम में
सुनहरी धूप की शुरूआत हुई है
मगर इन सुरमई अंधेरों ने
इस पतझड़ के मौसम में
तुम्हारी शफक़्त भरी नज़रों ने
मुझे क्यों कर किनार किया है -
शायद तुम इन पगडंडियों पर
भीगना नहीं चाहते हो
जबकि इन घटाओं ने
बदलते पथरीले मौसम में
बारिश की बूँदों को
अपनी हथेली में समेटना चाहा
फिर भी तुम्हारे रास्ते में
ये चाँद निकल ही आया
तुम्हारी तारिक राहों को रौशन करने के लिए
वक़्त से पहले। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं पागल हूँ

मैं पागल हूँ
हवा को छूता हूँ
खुशबू को ढूँढ़ता हूँ
पानी को पकड़ता हूँ
रूहों से मोहब्बत करता हूँ
क्योंकि मैं पाग़ल हूँ
टिमिटिमाते सितारों की करवटों में
शबनमी बूँदों की रंगोली से
इंन्द्रधनुषी बटवारे की लक़ीरें खींच लेता हूँ
आसमान से नज़रें मिलाता हूँ
चाँद को निहारता हूँ
सुनसान राहों को तन्हा रातों में तकता रहता हूँ
चाँदनी रातों में
अपने ही साए से लिपट जाता हूँ
क्योंकि मैं पागल हूँ -
मैं पागल हूँ सच में मैं पागल हूँ
घुप्प अंधेरों में
खुद के साथ सफर करता हूँ
भटके परिन्दों की रहनुमाई करता हूँ। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ामोशी में डूबा

क्या इस झील की ख़ामोशी में
मेरा अक्स डूब गया है इस ठहरे हुए पानी में
आज लहरें इस किनारे से उस किनारे तक
अपना सफ़र तय क्यों नहीं कर पा रही हैं?
शायद अब यह पानी मेरा नहीं
क्योंकि मुझे छूने की आदत अब यह भूल चुका है
यह मेरे पैरों की उँगलियों को
सदियों से भिगोता आ रहा था
मुझे पा के उछलता था
शोर मचाता था
लेकिन अब मेरे अक्स को
अपनी गहराई में धुँधला करता है
मैला करता है
और मैं
साहिलों की विरानी नापता रहता हूँ। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूटते तारों का मंजर

नीले आसमां में
तैरते बादलों के मंजर को
महसूस करने के बावजूद
हमने सारी ज़िंदगी
चाँद सितारों को पाने की तमन्ना में
यहीं गुज़ार दी है
जबकि हम यह भी जानते हैं
कि ना तो आकाश में बादल ही तैरते हैं
और ना ही हमारे नसीब में ये चाँद-सितारे हैं
हाँ, अकसर तन्हा और सुनसान रातों में
आकाश से टिमटिमाते हुए सितारों के
टूटने का मंज़र मेरी नजरों से गुज़रता है
और हमें इस बात का एहसास ज़रूर कराता है
कि यह दुनिया फानी है
हमें एक ऐसी सच्चाई का सामना करना पड़ेगा
जिसके लिए हमने इस धरती पर जन्म लिया है
इसलिये कि शायद हम
उन टूटे हुए सितारों की जगह लेने में
सफलता हासिल कर सकें! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साये पत्थरों के

न जाने क्यों
मेरे आग़ोश में
दुख के बादल पनाह लेते हैं
और सुख की धूप
हमेशा किनारा करती है मुझसे
मानता हूँ
खुशी तो पल दो पल की मेहमान होती है
और ग़म दूर तक साथ देता है
मेरे घर से गुज़रती
यह नदी अचानक क्यों सूख गई है
इन हवाओं में आज
बे-रुखी क्यों है?
यही वो फिज़ाएँ थीं
जो मेरे बालों को सँवारा करती थीं
पर अब मुझे छूने से ये गुरेज़ क्यों करती हैं
मेरे घर के आंगन में पड़े
इन पत्थरों की तन्हाई का अहसास है मुझे
जबकि यही पत्थर
चाँदनी रातों में मुस्कराते थे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने ही सायों से बातें किया करते थे
न जाने आज क्यों
मेरा मन उदास है-
मेरी धड़कनों में तुम
शामिल क्यों नहीं हो सके? ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परियों का शहर

'वहाँ' हाँ वहाँ परियाँ रहती हैं उस शहर में
जहाँ चारों ओर खुशबुओं के डेरे हैं
और वहाँ परियाँ अपनी उड़ान भरती हैं
रंग और नूर में लिपटी ये परियाँ
ख़लूस-ओ मोहब्बत का लिबास पहने
अमन का पैगाम बाँटती रहती हैं
भरोसा कीजिए वहाँ ख़्वाब बिखरते हैं
और हकीकत जन्म लेती हैं
वहाँ परियों के शहर में
मदमस्त हवाएँ गुनगुनाती हैं
आसमानों में ही बर्फ़ पिघलती है
हाँ वहाँ परियों के शहर में
मुस्कानों के आबशार गूँजते हैं
तितलियों की सदायें सुनाई देती हैं
झरनों का मधुर संगीत
रूहों को सुकून और ताज़गी बख़्शता है
क्योंकि वहाँ उस शहर में परियाँ रहती हैं। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशन लम्हे

मेरा हर वो लम्हा
अब तुम्हारे बगैर अधूरा है
जिस में तुम शामिल नहीं
मानता हूँ
तुम हर मौसम में मेरे पासबाँ रहे
मेरे करीब रहे
मेरे अंधेरों को तुम ने
मुनव्वर किया
मेरे साये को अपनी परछाईं समझा
और मुझे मुश्किलों में
सितारों भरी शाम से रूबरू कराया
अपनी अदाओं से मेरे एहसास को ज़िन्दा रखा
यह तुम्हारा एहसास
मेरे हर उस लम्हे को रोशन रखेगा
जिसमें तुम शामिल हो
पर सिर्फ ख़यालों में। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आख़िरी किरण

कभी मेरी चाँदनी सुबह खिल उठती थी
तुम्हारी सुनहरी मुस्कानों से
और न जाने ये अब क्यों
बे-वजह परेशान हो कर
बरसने की कोशिश करता रहा
जबकि मेरे उस दौर की धूप में
मैं अपने ही साये से लिपटता रहा
अक़्सर ये सोच कर
ढलते सूरज की आखरी किरण
शायद मेरे आने वाले कल को सँवारने में
मेरी मदद कर सके
जानता हूँ / ख़्वाब पल भर में बिखरते हैं
और हक़ीकत डराती है
पर हाँ यकीन है / फिर वो सुबह होगी
जो हमें, तुम से रू-ब-रू कराएगी
तुम से नई पहचान कराएगी
रिश्तों की अहमीयत समझाएगी
क्योंकि तुम्हारी मुस्कुराहटों में
मैं अक़्सर अपने तसव्वुर को महसूस करता हूँ। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे आने तक

फैला है आँचल आसमानों का
धरती के इस मख़मली हिस्से को
ढकने के लिये
शायद फिर से कोई
हवा का हल्का सा झोंका आ जाए
उस से छू कर
फिर मेरे बदन से लिपट जाए
मेरी रूह में उतर जाए
ताकि मेरी यादों को ताज़ा कर

वो सामने पहाड़ियों के दामन में बसा हमारा घर
हमारे ख़्वाबों का आशियाना
अभी भी महफ़ूज़ है
पिछले कल की तरह
यहाँ हर रात चाँदनी!
आज भी आया करती है हमसे मिलने
और छुपा लेती
इस असीम ख़ामोशी को अपने दामन में
महफ़ूज़ रखती है हमारे ख़्वाबों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर क्यों ना करूँ मैं
इन्तज़ार तुम्हारे लौटने का
और छिप जाऊँ तब तक
इन्हीं बर्फीली बस्तियों में
जब तक तुम ना आओ। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलो चलें

चलो चलें यहाँ से
और भूल जाएँ तल्ख़ियों के इस सफ़र को
फिर से छू लें अपनी ज़मीनों को
और कुछ पल बहक जाएँ
भूल जाएँ
सूरज के उसपार की गर्मी को
निकल पड़ें उस सफर पर
जहाँ ग़म और परेशानियों के काफिले
मीलों दूर हों
जहाँ सिर्फ अपने आप का
अपनों से एक अपनेपन का एहसास हो
जहाँ कोमल हवाएँ
हर दिन एक खुशी का संदेश ले कर आएँ
जहाँ रूह का हर मोड़ पर रूह से मिलन हो
चलो चले यहाँ से
और भूल जाएँ तल्खियों के इस सफ़र को। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रास्ते प्यार के

ये हैं प्यार के रास्ते
मोहब्बत की राहें
और हम तलाशते हैं
अपने आने वाले कल को
वो कल जिसमें हमारी ज़िन्दगियाँ रौशन हो सकें
ताकि हम जी लें सुकून से
जाने अनजाने कई बार वक़्त ने करवट ली
शायद हम
तुम्हारे आग़ोश में पनाह ले सकें
क्योंकि तुम जो तकती रहती हो
इन प्यार के रास्तों को
और तुम्हारी बाहें मुन्तज़िर रहती हैं
मुझे अपने आगोश में लेने के लिये। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़्वाबों की ताबीर

ख़्वाबों की ताबीर हो
इन्द्रधनुषी मौसमी बारिश हो
ज़िन्दगियों में बहारों की बौछार हो
समय को ठहरने की इज़ाजत हो
चाहतों में चुम्बक जैसी जुबिश हो
साँसों की गर्माहट में
होठों की कंपकपाहट हो
इन कदमों की आहटों में
पुनर्जन्म का एहसास हो
आशयानों में लगी आग हो
टूटे आइनों में बिख़रती तस्वीरें हो
लेकिन सिर्फ़ तुम मेरे ख़्वाबों में हो
मेरे ख़्वाबों की ताबीर हो। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जेहन के केनवास पर

इन रेतीली हवाओं का रुख
आज बे-असर क्यों है
सरगोशियाँ करती यह फिज़ाएँ
शायद तुम्हारे मख़मली गेसुओं को
छू कर आई है
'वो' तुम थे जो अपनी खुशबू से
हमारा दामन भरते रहे और वो हम थे
जो तुम्हारी पनाह में
बे-इख्तियार खोते रहे
इस तरह यूँ ही बीत गए साल-हा-साल
अपनी मदहोशी की नीलामी में
यह तसव्वुरात की दुनिया भी अजीब है
जहाँ हर बार
हम अपने ज़ेहन के केनवास पर
अपने किरदार बदलते रहते हैं
यह सोचकर कि हमारा सामना
कभी न कभी हकीकत से हो जाए। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न खुदा ही मिला

कुछ तुम्हारे वादे टूट गए
कुछ ख़्वाब बिखर गए
और कुछ हमारी तुम्हारी कोशिशें भी नाकाम हुईं
हम तो सजदों में मसरूफ रहे
और फिर भी
ना खुदा ही मिला न विसाल-ए-सनम
न इधर के रहे और न उधर के
मोहब्बतें मुफ़लिसी के दौर में पास रहतीं
ग़र तुम दूर न चले जाते
और हम यूँ ही तन्हा पत्थरों के साथ
नीलाम न हो पाते
हमारे तुम्हारे बीच
इन फ़ासलों के दरमियान
यह जलता हुआ सूरज
कब तक हमारी निगहबानी करता रहेगा- ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन्तज़ार का मौसम

धीरे-धीरे
ये सारे मौसम बदलते रहे
पर तुम्हारे लौटने के इन्तज़ार का मौसम
अभी लुप्त हो चुका है
और दरियाओं की रवानी थम चुकी है
अब के सावन में
बर्फ़ पिघलते ही
शायद तुम लौट आओ
मेरे पतझड़ की विरानी को दूर करने के लिये
मोहब्बत अब बे-जुबाँ है
ख़ामोश साहिलों में पानी की तरह है। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे बाद

हाय! ज़रा सी आहट होती है
तो दिल कहता है
शायद वो आ गया है
बरसों बाद रौशन करने
गुलज़ार करने मेरे इन पलों को
जो बस अब हमारी याद बन कर रह गये हैं
जानते हैं
तुम्हारा लौटना मुश्किल ही नहीं
नामुमकिन है
क्योंकि जो चला गया
वो फिर से न कभी लौट के आया
तुम्हारे साथ
बीते हर लम्हें में
तुम अभी तक मेरे लिये ज़िन्दा हो
सुना है चाहतें हमेशा अमर हो जाती हैं
आज भी इस मासूम शब में
जब अचानक से आसमां की तरफ देखता हूँ
तो एक चमकता सितारा खोजता हूँ
क्योंकि तुम ने कहा था मैं एक सितारा बन जाऊँगी। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खोया चाँद

यह रात है ख़ामोश
और आज की शब
ये सितारे बिना चाँद के तन्हाई महसूस कर रहे हैं
माना कि इस शब की ख़ामोशी को चीरती हुई
तुम्हारी दर्द भरी आवाज़ मुझे
तुम्हारे पास-पास होने का अहसास कराती है
पर क्या तुम हो मेरे हवनवा-हमराज़
शायद इस बात का अंदाज़ा लगाना
मेरे लिए मुश्किल है
क्योंकि तुम अक्सर गुम हो जाते हो
मेरी तन्हाइयों को चीर कर
और इस ख़ाली शब के
इन अंधेरों में
मैं ढूँढ़ता हूँ चाँद को
आज कहीं खो गया है। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधूरा सफ़र

क्यों यह सफ़र रहा हमारा अधूरा
शायद कुछ उलझनें पड़ी हैं सर-ए-राह
जो थाम लेती हैं दामन बे-वजह
क्यों वे-वजह
यह सूरज सफ़र में मेरा साथ छोड़ देता है
और मैं परछाइयों के हमराह
अपनी मंजिल की और निकल पड़ता हूँ
यह सोच कर कि
शायद मेरा यह अधूरा सफ़र
मंज़िल के साथ-साथ मुझे
मेरी खोई हुई पहचान वापिस दिला सके! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दर्द की बदली

बड़ी मुद्दत के बाद
मुझे यह अहसास हुआ
कि तुम्हारी ज़ुल्फें बिखरी-बिखरी सी क्यों रहती थी।
तुम्हारे होठों की थरथराहट क्या कहती थी
और तुम्हारी आँखों के आइने पर
किसी की तस्वीर रहती थी

बड़ी मुद्दत के बाद मुझे यह अहसास हुआ है
ज़िन्दगी के हसीन लम्हात
मेरी कमज़ोर हथेलियों से निकलकर
कहीं खो गये हैं
लेकिन-आज
रंग-ओ-ग़म के फलक पै
दर्द की बदली छाई है
बड़ी मुद्दत के बाद फिर से तेरी याद आई है। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इबादत की इबारत

सरहदें हैं मायूस पर
मेरे पाक तसव्वुर में
मेरी इबादत की इबारत तुम बन पातीं
ग़रचे बटवारे की लकीरें न खींची जातीं

अपनी उम्र के हर पड़ाव पर
सिले हैं अपने ज़ख्म
यह सोचकर
शायद आने वाला सफ़र
मेरी हर वो मुराद पूरी करेगा
जिस के हम हैं तलबगार
वक्त रौशन करेगा हमारी राहें
और आसमानों में रहने वाले फरिश्ते
दुआओं में हाथ उठाएंगे
हमारी मोहब्बत को अंजाम तक पहुँचाने के लिए। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लम्हों की फरियाद

उन लम्हों की क्या ख़ता
जो तुम्हारी यादों को
मेरी रूह में शामिल तो करते हैं
पर बे-वजह
रुसवाइयाँ भी मेरे दामन को छू कर गुज़रती हैं
सहराओं में जलती धूप
और इस तपते मौसम की तपिश
यकायक मेरे साये को ढकता तेरा आँचल
रूहानी छाँव का एहसास महसूस करता हूँ मैं
महसूस करता हूँ इन बदलते लम्हों की फरियाद
इन की बे-बसी
इन की कसक
जो मेरे वजूद को दस्तक तो देती है
पर हम रहते हैं बे-ख़बर। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे इन्तज़ार में

सुबह की ताज़गी
इन हवाओं-फिज़ाओं में तुम्हारी आमद
और मेरे ख़यालों में तैरती तुम्हारी याद की ख़ुशबू
अक्सर मुझे
तुमसे रू-ब-रू कराती है-

इसी तरह की सुबह हुआ करती थी
जब परिन्दे घोंसलों से निकल कर
अपनी परवाज़ लिए
मुझ तक तुम्हारे लौटने का पैग़ाम पहुँचाते थे
पर तुम फिर कभी लौट कर नहीं आए
हम आज भी झील के किनारे
तुम्हारे लौटने के इन्तज़ार में
सदियों से बे-क़रार हैं
सिर्फ़ एक झलक पाने के लिए
हमने आज तक सिर्फ़ तुम्हें महसूस किया है
कभी तुम्हें छू न सके। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मखमली ज़मीन

चलो चलें सूरज के उस पार
और छू लें गर्म ज़मीनों की तपती मिट्टी को
और सुलगते रहें कुछ पलों के लिये
यहाँ की इन झुलसती बारिशों में
सिर्फ़ भीगने का एहसास
दिल के किसी कोने में बसा लें
यहाँ कदम-ब-क़दम
तपिश-सिसकियों आहोज़ारी का आलम
छाया हुआ है
जी लेते हैं यहाँ वो लोग
जो दर्द में डूबे हुए हैं
मिट जाते हैं, फ़ना हो जाते हैं पल भर में
वक़्त यहाँ ठहरा हुआ है
इन बस्तियों की बर्फ़ को
आसमान में ही पिघलते देखा है
यहाँ झीलों के सीनों में खंज़र तैरते हैं
और हमने खून उबलते देखा है
पानियों में कश्तियाँ डूबी हुई हैं
और मल्लाहों को किनारे पै रोते देखा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलो चले यहाँ से
और भूल जाएं तल्लख़ियों के इस सफ़र को
फिर से छू लें अपनी मखमली ज़मीनों को
कुछ पल के लिये बहक जाएं भटक जाएं
सूरज के उस पार की गर्मी को
यहाँ इन पानियों में नहलाने की फिर से कोशिश करें। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेनाम रिश्ते

शायद हम इन रिश्तों को नाम देकर
रिश्तों की तौहीन कर रहे हैं
रहने भी दीजिए ऐसे ही
इन रिश्तों को बिना कोई नाम देकर
तुम भी चुप हो और मैं भी ख़ामोश हूँ
बेशक हम दोनों की आँखें बोलती हैं
पर हमारे जज़्बात भटकते हैं
बिखरते हैं
सूरज के 'अलाव' में जल जाते हैं
अब तुम कुछ कहो तो
शायद जुल्म की ये रात ढल जाए
मेरे कच्चे मकान की छत पर
चाँदनी लटक जाए
ताकि हम तुम इन रिश्तों को कोई नाम दे सकें। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीने के लिए

मीलों के फ़ासले अक्सर बिखर गए
दौरान-ए-सफ़र ज़िन्दगी सिमट गई
मंज़िल तक पहुँचने के लिए
साहस तो करना ही पड़ेगा
हर वक़्त के हर लम्हें को थामना पड़ेगा
बेज़ुबाँ परिन्दों को
कफ़स में कैद तो करना ही पड़ेगा
और ज़िन्दगी अगर संघर्ष है तो
संघर्ष तो करना ही पड़ेगा
इसके बावजूद सब को सब कुछ मिले
ये ज़रूरी तो नहीं! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारा एहसास

जब-जब मौसम बदलते हैं
तुम, हमारे आसमानों में ज़ाहिर होने लगते हो
कभी चाँद बनकर
तो कभी बादल बनकर
कभी-कभी हमारे हिस्से की धूप तुम चुरा लेते हो
और कभी हमें रोशनी से नवाज़ते हो
हमारी दुनिया में शामिल हो जाते हो
मेरा दर्द बनकर
और फिर गुम हो जाते अक्सर हवाओं की तरह
इतनी बे-रुख़ी क्यों
तुम्हें पाना अब अगर मुमकिन नहीं
पर इन बदलते मौसमों में
तुम्हारा एहसास जाने क्यों
इस बात की तरजुमानी करता है
कि तुम हो मेरे साथ
यहीं कहीं मेरे पास। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुंतज़िर हवाएँ

इस शब की ख़ामोशी को
क्या तुम महसूस करते हो
इन सन्नाटों को चीरती तुम्हारी सिसकियाँ
हमारे वजूद को दस्तक देती हैं
हमें माज़ी के शबिस्तानों से रू-ब-रू करती हैं
तुम्हारे दिए हुए ज़ख़्मों को
हरा करने की कोशिश करती हैं
बेशक क्यों न मौसम बदलते रहें
पर आज भी बेताब हैं ये चिनार के पत्ते
तुम्हारे पैरों को छूने के लिए
यहाँ की यह मासूम हवायें मुंतिज़र हैं
तुम्हारे बदन से लिपटने के लिये
क्योंकि तुम हमारी इस ख़ामोश शब के
हर पैहर में ज़िन्दा हो
जावेदाँ हो! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक फ़रियाद

फिर आज बसन्त के इस मौसम में
मैं तुम्हें इन पागल हवाओं की सनसनाहट में
महसूस कर रहा हूँ
तुम तो शायद अब लुप्त हो गए हो
फ़ना हो गए हो
फिर क्यों मुझे तुम्हारी आवाज़ का एहसास
इन सरफिरी फिज़ाओं घटाओं में हो रहा है
क्या तुम फिर से लौट आओगे मेरी दुनिया में
मेरे उजड़े वजूद को हरा-भरा करने के लिए
क्योंकि अब भी 'मैं' तन्हा हूँ विरान हूँ
इस शिकस्ता-ए-दिल में
हमेशा एक फरियाद रहती है
कि तुम मेरी दुनिया में
बसन्त के मौसम की तरह फिर से चले आते
ताकि हम दोनों
दूर तक देर तक साथ-साथ चलते
पास-पास चलते
फ़िसलते-सम्भलते और फिर चलते
एक अनजाने सफ़र की ओर! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ुदाओं का ख़ुदा

मैं ढूँढ़ता हूँ खोये हुए ग़म को
इक उदासी को
उस बेचैन ज़िन्दगी को
हर जुज़ तड़प है
जिसकी हर साँस मौत है
वो बदमस्तो-ख़राब पागल सा
सड़कों पर फिरता आवारा सा
वो बेरुख़ी जिसमें मोहब्बतों की तोहीन की बदबू है
वह तक़ल्लुम जो उगलता ज़हर है
वो परछाई जो रेंगते साये तनहाई के
वो सोहबतें जो गुम है तहजीब से
वह खुदाओं का खुदा जो आज है मुझसे जुदा! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या तुम्हें याद है

शायद ये हैं रिश्ते जन्म-जन्म के
जो तुझे इन फिज़ाओं, घटाओं
इस कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे में
मैं महसूस करता आ रहा हूँ
क्या तुम्हें याद है
इन पीले पत्तों को
तुम अपने आँचल में छुपाया करते थे
और यहाँ बर्फ़ की चादर पर
तुम अपने कदमों के निशान छोड़ जाया करते थे
तुम यहाँ शाम की तन्हाइयों में
मौसम-ए-ख़िज़ाँ को
मोहब्बतों का लिबास पहनाया करते थे
और एक नई सुनहरी सुबह
आप के दामन को
छू कर गुज़र जाया करती थी! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डूबते अक्स

देखा है हमने
इन पंक्तियों में अपने अक्स को डूबते हुए
और देखा है हमने इन साहिलों की बेरुख़ी को
इन प्यासी मौजों को
इन किनारों की नाराज़गी को
धारायें बहा लेती हैं मन की भावनाओं को
भटकते मन की दिशाएँ बदल देती हैं
और छोड़ जाते हैं हम
अपने अतीत को तशनगी को
इन खाली सहराओं में
शायद यह सोच कर कि
इन पानियों में डूबते अक्स को मैं ढूँढ़ सकूँ,
उसे पहचान सकूँ! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसे मौसम में

ऐसे ही मौसम होते हैं
दिल के क़रीब
जो गुज़रे दौर के दर्द को सम्भालते हैं
हाँ, तुमने अपने आँचल में छिपाया है
मेरी हर परेशानी को
जब-जब मैंने माज़ी के अवराक़ उलटाए
तुम्हें दिलासा देते हुए मैंने पाया है
पाया है मैंने तुम्हें
जहाँ के ज़र्रे-ज़र्रे में
ख़ुशी हो या ग़म
तुम साथ-साथ हो
कभी मेरी परछाई बन कर
तो कभी मेरी धड़कन बन कर
बेशक रूह जिस्म से अलग होती है
पर मेरे ख़्वाबों की तुम ताबीर हो
जब-जब ऐसे ही मौसम होते हैं
तब-तब तुम मेरे दिल के करीब होते हो! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साये की तलाश

इस जलती धूप में
मैं क्यों घूम रहा हूँ
अपने ही साये की तलाश में
ये पथरीले रास्ते आज क्यों मायूस हैं
शायद मेरा महबूब उदास है
और मुझे अपनी यादों में शामिल किया है
एक तवील अर्से के बाद
आज इन हवाओं में पहले जैसी ताज़गी क्यों नहीं
ये भटके परिंदे अपनी उड़ान तो भरते हैं
पर उन्हें अपनी मंज़िल का पता नहीं
मुसाफिर तो निकल पड़ते हैं
अपने लक्ष्य की जानिब
यह सोच कर कि
शायद ये पागल हवायें
उनका रास्ता न रोकें
पर यह सिरफिरा मौसम
ज़रूर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करता है। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतीत का मौसम

आज यादें अपने अतीत की
आने वाले कल को दर्शाती हैं
वो कल
जिसमें हमारा बचपन
किसी का मोहताज नहीं हुआ करता था
हम बादलों को अपनी मुट्ठी में कैद कर लेते थे
पानियों की गहराइयों को नाप लेते थे
अपने वजूद में झाँकने की कोशिश भी करते थे
बर्फ़ को पिघलने से रोक लेते थे
अंधेरी रातों में
आसमान की बुलंदियों को
टिक-टिकी बाँध
अपने हसीन सपनों की बुनियाद को
मज़बूत किया करते थे
यह वो दौर था
जब हमारी मासूमियत पर
हर कोई फिदा हुआ करता था
और हम हवाओं की सनसनाहट के साथ
सुर मिलाया करते थे। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरे दिल में

रहना है तेरे दिल में
तेरी आरज़ू बन कर
तेरी इबादत बनकर
हम पूजते रहे ख़ामोश पत्थरों को
विरानियों को, बे-सहारा सायों को
और ढलती शामों को
क्योंकि रहना है तेरे दिल में
तेरी ख़्वाइश बन कर
तेरी हसरत बन कर
तेरी इबादत बन कर
मगर मेरे आँगन की धूप
मुझ पर कभी मेहरबान न रही
अब जबकि रहना है तेरे दिल में
शायद तेरा मुकद्दर बन कर
तेरी ज़ुबा बनकर तेरी आबरू बनकर
फिर क्यों न बीते मौसम की तपिश को
अलविदा करें
और रहें तेरे दिल में
तेरी धड़कन बन कर। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुआएँ

काश! हम चाँद को नहला सकते
सितारों की ख़ामोशी तोड़ सकते
बुझे चिराग़ फिर से रौशन कर सकते
अपने बीते मौसम के हर पल को
इस क़द-ए-आदम आईने में महसूस कर सकते
तुम्हें दुनिया के
हर सितम से दूर रख सकते
और तुम्हारी मुश्किलों में
तुम्हारे टेढ़े-मेढ़े रास्तों को
खुशनुमाँ बना सकते
काश! तुम्हारी इन अंधेरी राहों को
हम रौशन कर सकते
और सलामती के लिए
तुम्हारी दुआओं में उठते हमारे भी हाथ -
मिलन बिछड़न की रीत
सदियों से चली आई है
आँखों से ओझल होकर
नहीं दिल से जुदाई है। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ुशबुओं के मेले

मुस्कुराती सुबह
परिन्दे अपनी परवाज़ लिए
आसमान की बुलन्दियों को छूने की कोशिश में मगन
मदमस्त हवाओं का झुरमट
जहाँ तक नज़र दौड़ाओ
उम्मीदों के सागर उमड़ आए हैं
लहरें इन ख़ामोश साहिलों को छूने को बेक़रार हैं
यहाँ ख़ुशबुओं के मेले लगे हैं
उदासी आज कहीं गुम हो गई है
तेरी उँगली पकड़ कर
मैं क्यों न तुम्हें इन्द्रलोक की सैर करवाऊँ
जहाँ शायद अप्सराएँ तुम्हारी इबादत करें
तुम्हारे बदन से लिपट जाएँ
और फरिश्ते दुआओं में अपने हाथ उठाएँ
ताकि एक नई सुबह की शुरूआत हो सके। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इज़हार

नई आशाओं और उमंगों के साथ
हम अपनी परवाज़ लिए
हम आप के दिलों को
छूने की ज़ुर्रत तो ज़रूर करेंगे
पर धीरे-धीरे
अपनी मोहब्बत का इज़हार भी
करने की कोशिश करेंगे
क्योंकि दिलों में बसती हैं धड़कनें
और धड़कनें आप की याद दिलाती हैं
एक सवाल मन में हमेशा पनाह लेता है
क्या सनम बेवफा होते हैं?
अरे-अरे... तुम्हारे दाँतों-तले उँगली दबाना
मैंने पूछा क्या सनम होते हैं बेवफा! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोशिश

रिश्तों के इस मौसम में
कुछ अनकहे सवालात
कुछ अनसुनी बातें रह गईं पीछे
शायद यह सोच कर
कि हम हद-ए-परवाज़ को छूने की
नाकाम कोशिश करते रहे
करते रहे अपनी तमन्नाओं
अपनी आरज़ुओं का
बेसब्री से इन्तज़ार
बुलन्दियों में अपनी परवाज़ लिये
अपने आसमान को तलाशने की
कोशिश करते रहे। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परछाइयों का कारवाँ

एक शब ऐसी भी थी जब
घुप्प अंधेरों में मैं
अनजानी परछाइयों के हम-राह
अपने मुकद्दर को संवारने की
ज़रूरत महसूस करने लगा
और तलाशने लगा अपने वजूद को
अपने अतीत को
अपने माज़ी को
मेरे ख़्वाबों में बसी हैं
तुम्हारे हर पल की करवटें
और तुम्हारे फुर्क़त में बहे आँसू
मैंने सम्भाल के रखे हैं अपनी पलकों में
शब-ए-हिजर क़यामत ढाती है
जब तुम याद आते हो
परछाइयों के इस कारवां में
बेबसी के मनाज़िर सिर्फ़ पीड़ा देते हैं
दर्द के सरूसार करते हैं। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कदमों के निशां

इन सरहदों पर
तुम्हारे क़दमों के निशाँ अभी भी मौजूद हैं
रात में जब ये चाँद निकलता है
तुम्हारी परछाई इन रेतिली टीलों
मैं मेहसूस करता हूँ
ये नदी जब उछलती है
मैं तुम्हें इन मौजों में देखता हूँ
पतझड़ में ये किनारे जब खुशक हो जाते हैं
मुझे तुम्हारे दर्द का अहसास होता है
जब ये बहता पानी रुकता है
तुम्हारी नशम नम हो जाती है
मैं ये भी जानता हूँ परछाइयों के इस सफ़र में
तुम अब कितनी दूर चली गई हो
मुझे इस बात का भी अंदाज़ा है
पर इस सफ़र के दौरान
मैं तुम्हारे आँसू रोक ना सका
इसलिए शायद इन सरहदों पर
तुम्हारे क़दमों के निशां अभी भी मौजूद हैं- ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आग़ाज़

हम तो मुसाफ़िर है
मंजिल की तलाश में भटकते हैं
जानते हैं रास्ते दुशवार हैं
कठिन हैं राहें
फिर भी सफ़र है जारी
पीड़ाओं के सहरा में
कितनी ज़िन्दगियाँ भटकती हैं
समझना बड़ा-मुशकिल है
पर समय की रफ़तार के साथ
शायद इस भटके हुए मुसाफिर की तलाश खत्म हो
ताकि एक नई सुबह का आग़ाज हो सके... ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढूँढ़ता हूँ उसे

कभी-कभी हमारी कुछ तहरीरें और तस्वीरें
माज़ी की यादों को
फिर से तर-ओ-ताज़ा करने में
इस कद्र मददगार साबित होती हैं
कि हम अपने आने वाले कल के
सपनों को साकार कर सकते हैं
अपने सुनहरे भविष्य की हथेली के आईने में का
आग़ाज़ भी कर सकते हैं
जो छूट गया / वो हमारी नादानी थी
और अब जो सामने है
वो ही हमारा सच्च है
शायद यही सोच कर
हर कोई अपनी मुश्किलों का
उजाला करने में छुट जाता है
और यह कहता है
कि तेरी परछाई से तामीर करूँ ताजमहल
आसमां से चाँद चुरा लूँ
और तुम्हारे घर के एक कोने में रख दूँ-
"ढूँढ़ती हैं तुम्हें मेरी परछाइयाँ
ऐ खोई हुई मेरी ज़िन्दगी तू है कहाँ!" ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरहदों के पार

बन्द आँखों के ख़्वाबों की सरहदें नहीं होतीं
रोज़ चला जाता हूँ मैं उस पार अपने महबूब से मिलने
उस पार दूर तक
जहाँ चाँद और सूरज का मिलन होता है
बातें करता हूँ शाम देर तक
बातें करता हूँ अपने महबूब से
पुष्पहार पहनाता हूँ
फूलों की बारिश / मौसम-ए-खिजाँ
अक्सर मेरे गीतों की गुनगुनाहट को
अभी भी तुम्हारी फितरत में शामिल रखे हैं
अपने यार को मीना बाज़ार की सैर भी कराता हूँ
तुम्हारी नाजुक कलाइयों में कँगन पहनाता हूँ
और इन बादामी आँखों में कजरा लगाता हूँ
बन्द आँखों के ख़्वाबों की सरहदें नहीं होतीं
रोज़ चला जाता हूँ उस पार अपने यार से मिलने
तुम हुस्न की हो मिसाल
हो पूनम का चाँद
ज़िन्दगियों की हो सहर
हो ढलती शामों की मख़मली नींद। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ कहो

इन बर्फीली घाटियों में
एक ज़िन्दगी ख़ामोश है।
यहाँ लम्हें चुप हैं
पर रातें हैं... शादाब सन्नाटा पसरा है
घुप्प अंधेरे भी यहाँ बोलते हैं
तुम भी कुछ बात करो
कुछ कहो
तोड़ दो अपनी चुप्पी, अपनी उदासी को
आज यहाँ इन बर्फीली हवाओं में
पत्थर भी पिघलते हैं
यहां मेरे सब्र का पैमाना भी
अब टूटा जा रहा है
कुछ कहो
... तुम भी कुछ बात करो। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस जहां में

परियाँ फैलाती हैं मन का आँचल
भर देती हैं खुशियों से दामन
अपने साथ कहीं दूर तक ले जाती हैं
गगन के उस पार
अपनी मुस्कुराती दुनिया में
जहाँ फरिश्ते राहों में सजदा करते हैं
जहाँ यका-यक फूलों की बारिश होती है
जहाँ चाँद सितारे
हमारे पाँव छूने में गुरेज़ नहीं करते हैं
जहाँ रूह रक़्स करती है
और जिस्म प्यार का इज़हार। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीले पानियों में

नीले पानियों की गहराई में
यह तुम्हारा चेहरा आज धुंधला क्यों नज़र आता है
क्या तुम अब लुप्त होना चाहते हो
या अपनी परेशानी बयान नहीं करना चाहते हो
तुम्हारे वजूद में आने से
रिश्तों की बारीकियों को समझने में
आसानी ज़रूर होती
ग़र ये रिश्ते अपनी मंज़िल हासिल करते
कभी-कभी जज़्बात में आकर
क्यों हम एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं
और खोजते हैं नए रिश्ते
यह जान कर भी
कि इन रिश्तों की बुनियाद मज़बूत नहीं है
शायद यही वजह है
कि इन नीले पानियों की गहराई में
वो चेहरा धुंधला नज़र आता है
जो कभी चाँद जैसा चमकता रहा। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरहदों के आर-पार

सरहद के 'उस पार'
आकाश में अपनी उड़ान भरते थे पंछी
मीलों सफर तय कर थकहार कर
जब सुस्ताने लगते हैं
तो इन्हें यह मालूम नहीं होता है
कि हमने किस की ज़मीन पर क़दम रखा
क्या ये सरहदें सिर्फ़ इन्सानों के लिए बनी हुई हैं
हम अपनी ज़मीनों का बँटवारा ज़रूर कर सकते हैं
पर मोहब्बत की सरहदों पर खीचीं लकीरें
हमारे लिए बे-मायने हैं
प्यार की कोई सरहद नहीं
कोई मज़हब नहीं
बादल बरसते वक़्त
हवा चलते हुए
खुशबू का एहसास
पाक-ओ-पवित्र मोहब्बत का एहसास
किसी सरहद को नहीं मानते.... ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुमनाम सफ़र

परछाइयों के इस सफ़र में
हमारे अपने साये आज गुम हैं
और अब
मील के पत्थर नज़रों से भी ओझल होने लगे हैं
शायद बदल रही है
क़ायनात की हर वो तख़लीक
जो कभी इन नंगी दीवारों पर चस्पां हुआ करती थी
और इन पत्थरों को
गिरने से रोक लेती थी अपनी मदहोशी में
कई बार अपनी ही परछाई को रौंदने की
नाकाम कोशिश भी की होगी
ताकि मंज़िल का पता तो चले
और ये गुमनाम सफ़र
पा-ए-तक़मील तक पहुँचा जाए
बिना किसी सहारे के... किसी खौफ के...
अधूरा ख़्वाब
रक़्स करती बर्फीली सर्द हवाएं
ज़मीन पर बिछी हैं सफेद चादर
और खुले आकाश में टिमटिमाते हैं सितारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह रात है पूनम की
फ़िसलते-फ़िसलते दोनों एक दूसरे का हाथ थामे
ये कहाँ आ गए हैं हम-
फिर क्या इस रात की सुबह होगी
क्या हमें हमारी मंज़िल मिलेगी
क्या ये सितारे हमारी मोहब्बत की गवाही देंगे
क्या यह पूनम का चाँद
हमारी ज़िन्दगियों को रौशन करेगा
क्या हमारे ख़्वाबों की ताबीर होगी
क्या विरानी के ये पत्थर हमारे लिए
मील पत्थर साबित होंगे
या यूँ ही माज़ी के शबिस्तानों में
ज़िन्दगी के बचे पल गुज़र जाएंगे
एक अधूरा ख़्वाब लिए। ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ तुम कहो - कुछ हम कहें

आज इन बरसातों में
दिलों ने फिर याद किया
उन्हें जो कभी दिल के बहुत क़रीब थे
शायद अपनी धड़कनों से भी क़रीब
वो जिसने मोहब्बतों का लिबास पहनाया
वो जिसने इन फ़िज़ाओं में गुनगुनाना सिखाया
अक्सर उनकी आवाज़
मैं इन बरसातों में हमेशा सुनता आ रहा हूँ
उनके कदमों की आहटें
मैं हमेशा महसूस करता था
शायद शब्दों में बयान करना मुमकिन नहीं
अगर मुमकिन है तो सिर्फ़ उन बीती यादों को
फिर से ताज़ा करना
जो मेरे तुम्हारे जीवन से जुड़ी हुई हैं
क्यों न हम दोनों एक दूसरे के ख़यालों में
थोड़ी देर के लिए डूब जाएं
कुछ तुम कहो... कुछ हम कहें... ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधूरे ख़त

मेरे महबूब
ये आख़िरी ख़त मेरा अधूरा रहा
क्योंकि अब मैं शिद्दत से
अलफाज़ की कमी महसूस करता हूँ
कारवाँ गुज़रते-गुज़रते
मैंने जब जब भी लिखा
तेरे नाम लिखा
बे-हिसाब लिखा
बे-खुदी में लिखा
और पुरअसर लिखा
और मोहब्बत में लिखा
अपने जज़्बात को
अलफाज़ की सूरत में
ख़त के ज़रिए ज़ाहिर किए
शुक्रगुज़ारी के मोहताज रहते हैं
जब सुनते हैं तुमने मेरे ख़त सम्भाल के रखे हैं
और अक्सर फुर्सत में इनका मुताला भी करते हैं
अपने अधूरे ख़त को
मुकम्मल करने की कोशिश करूँगा
फिलहाल बस यही कहना चाहूँगा! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माज़ी के रिश्ते

पिछली शब घुप्प अंधेरे में एक आहट सुनाई देती है
धुंधली तस्वीर का एहसास भी होता है
पर नज़रों से ओझल हो जाती है
ज़रूर यह वहम है मेरा
क्योंकि माज़ी के रिश्ते कहीं खो गए हैं
ये रिश्ते पलभर में क्यों मिटते हैं
क्यों हम उन रिश्तों को भूल जाते हैं
जिन से हम अपने आने वाले कल
की शुरूआत करते हैं
क्या वाकई हम रिश्तों की बारीकियों को
समझने में नाकाम रहते हैं! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिछले मौसम में

यहाँ आज कल यहाँ
रूहों में बेचैनी है, बे-करारी है
तड़प है, एक उलझन है
एक वो भी दौर था
जब हमारे जिस्म अलग-अलग थे
पर हमारी रूहें एक थीं
हमारी धड़कनें साथ-साथ धड़कती थीं
अक्सर हमारी परछाइयों का मिलाप हुआ करता था
तुम्हारी घनी ज़ुल्फ़ों से हवा खेला करती थी
काजल तुम्हारी आँखों में
बहुत देर तक ठहरता था
मेहन्दी भरे पाँवों में पायल और चूड़ियों की ख़नक
तुम्हारे मौजूद होने का एहसास कराती थी
वो तेरा लहराता हुआ नीले रंग का दुपट्टा
और मेरी आँखों का रिमझिम सावन
आज भी मुझे
पिछले मौसम की याद दिलाता है
जब तम कच्ची पगडण्डियों में भीगा करती थी
और मैं तुम्हारी इन मासूम अदाओं को
देर तक निहारता रहता था! ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे महबूब

मेरे महबूब
आज मैं अपनी ही महफ़िल में
अकेलापन महसूस कर रहा हूँ
मेरे इस घर के दर-ओ-दीवार
ख़ामोशी का लिबास पहने हुए हैं
अब चाहतें शायद चुप हैं
यह मौसम ग़मज़दा है
दरियाओं की रवानी थम चुकी है
क्यों? इन साहिलों को पानी छूने से कतरा रहा है
मेरे महबूब
तुम्हारे बगैर यह मेरी तहरीरें बे-असर हैं
मेरी नज़्में मेरे नग़्मे मेरे गीत बे-मायने हैं
मेरे महबूब मैं यह भी जानता हूँ
कि तुम्हारा ताल्लुक अब हमारी दुनिया से नहीं है
तुम आसमानों के दायरे में दाख़िल हो चुके हो
पर क्या तुम
हमारा ख़याल बन कर
हमारी दुनिया में
एक बार दस्तक नहीं दे सकते हो? ❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी यूँ भी तो हो

कभी यूँ भी तो हो
परियों की महफ़िल हो
मौसम हो बरसात का
और तुम आओ

कभी यूँ भी तो हो
ये नर्म-मुलायम हवाएँ
तुम्हें छू कर गुज़रें
और तुम आओ
मेरी भूली बिसरी यादों में
तुम शामिल हो

कभी यूँ भी तो हो
मेरे जज्बात अहसासात
का उन्वान बन पाते

कभी यूँ भी तो हो
तुम शामिल रहते
मेरी रूह में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन घटाओं में
मेरे हर मौसम में
पिछले मौसम की तरह

कभी यूँ भी तो हो
तुम जो आते
मेरा मकान घर बन जाता
और दीवारें बोलने लगतीं

कभी यूँ भी तो हो
तुम शामिल होते
मेरे ख़्वाबों में
मेरी करवटों की तरह
कभी यूँ भी तो हो! ❑

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिश्तों की ख़ुशबू

और मैं चलता रहा
उस मोड़ तक
जहाँ तुम मुझे तन्हा छोड़ आए थे
ग़रचे यह सफ़र आज भी मुझे
मेरे हर उस बीते लम्हे को
भुलाने का हौसला देता है
मगर तुम्हारी मासूम बेबस
अदाओं का अहसास
कैसे भुला पाऊँगा
जबकि हमारे रिश्ते
अब पिंजरों में क़ैद हैं
फिर भी उन रिश्तों की खुशबू
हमारे दरम्यां के फ़ासलों को
कम करने में
हमेशा मदद करती रही है।

(पुस्तक की एक कविता)

AYAN PRAKASHAN
अयन प्रकाशन
साहित्य संस्कार के तीन दशक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रमेश मराठा

जन्म : 25 फरवरी

सम्प्रति : ऑल इण्डिया रेडियो, कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में वरिष्ठ उद्घोषक।

सम्पर्क : वरिष्ठ उद्घोषक
आकाशवाणी कठुआ
(जम्मू-कश्मीर)

मोबाइल : 9419245577

AYAN PRAKASHAN

अयन प्रकाशन

साहित्य संस्कार के तीन दशक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant